नौबतखाने में इबादत (यतींद्र मिश्र)

पाठ का परिचय

संसार का शायद ही कोई ऐसा संगीतप्रेमी होगा, जो प्रसिद्ध शहनाईवादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के नाम को नहीं जानता। संकलित पाठ 'नौबतखाने में इबादत' इन्हीं बिस्मिल्ला खाँ पर रोचक शैली में लिखा गया व्यक्ति-चित्र है। लेखक यतींद्र मिश्र ने इस पाठ में बिस्मिल्ला खाँ का सामान्य परिचय देने के साथ-साथ उनकी रुचियों से भी परिचित कराया है। इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि उन्होंने संगीत की साधना अपने अंतर्मन की सघन बुनावट की छाँव में अत्यंत लगन और तन्मयता से करके शहनाई के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। किसी भी शास्त्र के नैपुण्य-शिखर पर जिस अभ्यास, धैर्य और उसके मंथन की आवश्यकता होती है, वह सब बिस्मिल्ला खाँ के चरित्र में समाहित है। उन्होंने संगीत के क्षेत्र की गुरु-शिष्य परंपरा का अत्यंत श्रद्धा के साथ अनुकरण किया, जिसका परिणाम यह है कि बिस्मिल्ला खाँ 80 वर्ष की आयु में भी शहनाई की साधना निर्बाध रूप से करते रहे। शास्त्रीय संगीत के सुविज्ञ विद्वान् यतींद्र मिश्र ने अपनी सहज और प्रवाहपूर्ण भाषा के द्वारा उनकी शहनाई की अनुगूँज को इस शब्द-चित्र में साकार कर दिया है।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. बिस्मिल्ला खाँ साहब – बचपन का नाम अमीरुद्दीन • बिहार के डुमराँव में जन्म • पिता पैगंबरबख्श खाँ, माता मिट्ठनबाई, बड़े भाई शम्सुद्दीन • दो मामा–सादिक हुसैन और अलीबख्श • दादा, मामा, परदादा, पिता सभी खानदानी शहनाई वादक • छह वर्ष की उम्र में पिता के साथ बनारस आगमन • काशी के पंचगंगा घाट स्थित बाला जी मंदिर की ड्योढ़ी के नौबतखाने से निकलने वाली मंगलध्वनि से परिचय • रसूलनबाई और बतूलनबाई के रागों को सुनकर संगीत के प्रति आसक्ति • पक्के नमाज़ी और सुर-साधक • सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते हैं • अस्सी वर्षों की संगीत-साधना के बाद भी स्वयं को सुर बरतने में अनाड़ी मानने वाले • मुहर्रम माह में शहनाई वादन को त्यागकर अज़ादारी मनाने वाले • मुहर्रम की आठवीं तारीख को आठ किमी पैदल चलकर रोते हुए नौहा बजाते हुए अज़ादारी करके मानवीय भावनाओं को व्यक्त करने वाले • बचपन से फिल्मों के शौकीन • रियाज़ी और स्वादी दोनों • काशी विश्वनाथ में अपार श्रद्धा • मरते दम तक शहनाई और काशी का साथ न छूटने की साध • शहनाई के तात्पर्य • भारतरत्न से सुशोभित • बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक • हिंदू-मुस्लिम एकता और भाईचारे की भावना के प्रेरणास्रोत • विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों, संगीत नाटक अकादमी एवं पद्मविभूषण जैसे सम्मानों से अलंकृत • 21 अगस्त, 2006 को निधन।

पाठ का सारांश

बालक अमीरुद्दीन का शहनाई और राग से परिचय– 'नौबतखाने में इबादत' प्रसिद्ध शहनाईवादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ पर रोचक शैली में लिखा गया व्यक्ति-चित्र है। सन् 1916 से 1922 ई० के मध्य की काशी, उसके पंचगंगा घाट पर बने हुए बाला जी मंदिर की ड्योढ़ी, वहाँ स्थापित नौबतखाना और उससे निकलने वाली शहनाई की मंगल-ध्वनि इस व्यक्ति-चित्र की शुरुआत करती हैं। अमीरुद्दीन की आयु अभी केवल छह वर्ष है और बड़ा भाई शम्सुद्दीन नौ वर्ष का। अमीरुद्दीन अभी राग के बारे में समझता नहीं है, फिर भी उसके मामा (मामूजान) भीमपलासी, मुलतानी आदि कहते रहते हैं। अमीरुद्दीन इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं समझता; क्योंकि उसकी अभी उम्र नहीं है। अमीरुद्दीन के मामा सादिक हुसैन और अलीबख्श देश के प्रसिद्ध शहनाईवादक हैं। वे अपने दिन की शुरुआत बाला जी की ड्योढ़ी पर शहनाई बजाकर ही करते हैं। यह उनका खानदानी पेशा है।

बिस्मिल्ला खाँ का संक्षिप्त जीवन-परिचय– इसी बालक अमीरुद्दीन अर्थात् उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का परिचय इस प्रकार है–

अमीरुद्दीन का जन्म डुमराँव, बिहार के एक संगीत-प्रेमी परिवार में हुआ था। 5-6 वर्ष डुमराँव में बिताकर वह नाना के घर, ननिहाल काशी में आ गया। डुमराँव का इतिहास में कोई स्थान बनता हो, ऐसा नहीं लगा कभी भी। पर यह ज़रूर है कि शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं। शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग होता है। रीड अंदर से पोली होती है, जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है। रीड, नरकट (एक प्रकार की घास) से बनाई जाती है, जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है। इतनी ही महत्ता है इस समय डुमराँव की, जिसके कारण शहनाई जैसा वाद्य बजता है। फिर अमीरुद्दीन, जो हम सबके प्रिय हैं, अपने उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ साहब हैं। उनका जन्म-स्थान भी डुमराँव ही है। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव निवासी थे। बिस्मिल्ला खाँ उस्ताद पैगंबर बख्श खाँ और मिट्ठन के छोटे साहबजादे हैं।"

रसूलन और बतूलनबाई दो बहनों के रागों से संगीत की प्रेरणा-प्राप्ति– बिस्मिल्ला खाँ की आयु अभी 14 वर्ष है। वे भी बाला जी के मंदिर के नौबतखाने में रियाज़ के लिए जाते हैं। वे जिस रास्ते से जाते हैं, वहीं रसूलनबाई और बतूलनबाई की ड्योढ़ी है। वहाँ दोनों का गाना बिस्मिल्ला खाँ को अच्छा लगता है। ठुमरी, टप्पे, दादरा आदि को बिस्मिल्ला खाँ ने यहीं सुना। अपने बहुत-से साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ साहब ने माना है कि उन्हें अपने जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहनों को सुनकर मिली।

शहनाई का इतिहास– वैदिक इतिहास में शहनाई का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। शहनाई को संगीत शास्त्रांतर्गत 'सुषिर-वाद्यों' में गिना जाता है। अरब देश में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य, जिसमें नाड़ी (नरकट या रीड) होती है, को 'नय' कहते हैं। शहनाई को 'शाहेनय' अर्थात् 'सुषिर वाद्य में शाह' की उपाधि प्रदान की गई है। सोलहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में तानसेन द्वारा रची बंदिश, जो संगीत राग कल्पद्रुम से प्राप्त होती है, में शहनाई, मुरली, वंशी, शृंगी एवं मुरछंग आदि का वर्णन मिलता है।

पारंपरिक मांगलिक वाद्य– अवधी पारंपरिक लोकगीतों एवं चैती में शहनाई का उल्लेख अनेक बार आया है। मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करने वाला शहनाई नामक यह वाद्य इन जगहों पर मांगलिक विधि-विधानों के अवसर पर ही प्रयुक्त हुआ है। भारत के मंगल वाद्य 'नागस्वरम्' की तरह शहनाई, प्रभाती की मंगलध्वनि का सम्पूरक है।

खुदा से मात्र एक सच्चे सुर की आरज़ू– शहनाई के बादशाह बिस्मिल्ला खाँ अस्सी वर्षों से खुदा से एक सच्चा सुर माँग रहे हैं। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज़ इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है।

मुहर्रम पर शांत शहनाई– बिस्मिल्ला खाँ और शहनाई के साथ जिस एक मुस्लिम पर्व का नाम जुड़ा हुआ है, वह है मुहर्रम। मुहर्रम का महीना वह होता है, जिसमें शिया मुसलमान हज़रत इमाम हुसैन एवं उनके कुछ वंशजों के प्रति अज़ादारी (शोक मनाना) मानते हैं। पूरे दस दिनों का शोक। वे बताते हैं कि उनके खानदान का कोई व्यक्ति मुहर्रम के दिनों में न तो शहनाई बजाता है, न ही किसी संगीत के कार्यक्रम में भाग लेता है। आठवीं तारीख उनके लिए विशेष महत्त्व की है। इस दिन खाँ साहब खड़े होकर शहनाई बजाते हैं व दालमंडी में फातमान के करीब आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए, नौहा बजाते जाते हैं। इस दिन कोई राग नहीं बजता। राग-रागिनियों की अदायगी का निषेध होता है इस दिन।

बनारस से जुड़ी कुछ यादें– उनकी आँखें इमाम हुसैन और उनके परिवार के लोगों की शहादत में नम रहती हैं। अज़ादारी होती है। हज़ारों आँखें नम। हज़ार बरस की परंपरा पुनर्जीवित। मुहर्रम संपन्न होता है। एक बड़े कलाकार का सहज मानवीय रूप ऐसे अवसर पर आसानी से दिख जाता है। मुहर्रम के गमज़दा माहौल से अलग, कभी-कभी सुकून के क्षणों में वे अपने जवानी के दिनों को भी याद कर लेते हैं। उन्हें कुलसुम हलवाइन की कचौड़ी वाली दुकान और सुलोचना ज़्यादा याद आती हैं। सुलोचना उनकी पसंदीदा हीरोइन रही थीं। सुलोचना की नई फ़िल्म देखना उनका शौक था। अपने नाना को शहनाई बजाते देखता-सुनता अमीरुद्दीन खुद भी शहनाई में डूब गया।

संकटमोचन एवं काशी विश्वनाथ मंदिर के प्रति अटूट श्रद्धा– काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है। यह आयोजन पिछले कई बरसों में संकटमोचन मंदिर में होता आया है। यह मंदिर शहर के दक्षिण में लंका पर स्थित है व हनुमान जयंती के अवसर पर यहाँ पाँच दिनों तक शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन-वादन की उत्कृष्ट सभा होती है। इसमें बिस्मिल्ला खाँ अवश्य रहते हैं। अपने मजहब के प्रति अत्यधिक समर्पित उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ जी के प्रति भी अपार है। वे जब भी काशी से बाहर रहते हैं, तब विश्वनाथ व बाला जी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते हैं, थोड़ी देर ही सही, मगर उसी ओर शहनाई का प्याला घुमा दिया जाता है और भीतर की आस्था रीड के माध्यम से बजती है। खाँ साहब की एक रीड 15 से 20 मिनट के अंदर गीली हो जाती है, तब वे दूसरी रीड का इस्तेमाल कर लिया करते हैं।

काशी की संस्कृति, बिस्मिल्ला और शहनाई एक-दूसरे के पूरक–बिस्मिल्ला खाँ काशी को बहुत प्रेम करते थे। काशी की संस्कृति को बिस्मिल्ला खाँ से अलग करके नहीं देखा जा सकता। शहनाई और बिस्मिल्ला खाँ को भी अलग करके नहीं देखा जा सकता।

काशी के गौरव बिस्मिल्ला खाँ– काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक रहे हैं, उसी तरह मुहर्रम-ताज़िया और होली-अबीर, गुलाल की गंगा-जमुनी संस्कृति भी एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। अभी जल्दी ही बहुत कुछ इतिहास बन चुका है। अभी आगे बहुत कुछ इतिहास बन जाएगा। फिर भी कुछ बचा है, जो सिर्फ़ काशी में है। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है। काशी आनंदकानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज़ सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है, जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

विविध सम्मान और नब्बे वर्ष की आयु में मृत्यु–भारतरत्न से लेकर इस देश के ढेरों विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मविभूषण जैसे सम्मानों से नहीं, बल्कि अपनी अजेय संगीतयात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे। नब्बे वर्ष की भरी-पूरी आयु में 21 अगस्त, 2006 को संगीत-रसिकों की हार्दिक सभा से विदा हुए खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर ज़िंदा रखा।

शब्दार्थ

ड्योढ़ी = दहलीज। **नौबतखाना** = प्रवेश द्वार के ऊपर मंगल-ध्वनि बजाने का स्थान। **मामूजान** = मामा। **वाजिब** = उचित। **विग्रहों** = मूर्तियों। **साहबजादे** = पुत्र। **रियाज** = अभ्यास। **मार्फत** = द्वारा। **शृंगी** = सींग का बना वाद्य-यंत्र। **मुरछंग** = एक प्रकार का लोक वाद्य-यंत्र। **अवधी** = अवध प्रांत की भाषा। **नेमत** = ईश्वर की देन, सुख, धन-दौलत। **सज़दा** = माथा टेकना। **सुर** = स्वर। **तासीर** = गुण, प्रभाव, असर। **मुराद** = इच्छा। **दुश्चिंताओं** = बुरी चिंताओं। **गमक** = सुगंध। **बरतने** = उपयोग करने। **अज़ादारी** = शोक मनाना। **खास** = विशेष। **बदस्तूर** = परंपरागत, तरीके से। **मेहनताना** = पारिश्रमिक। **ई** = यह। **मइया** = माँ। **तालीम** = शिक्षा। **अदब** = कायदा, साहित्य। **जन्नत** = स्वर्ग। **चैती** = एक तरह का चलता गाना। **परवरदिगार** = ईश्वर। **मालिक** = ईश्वर। **पक्का महाल** = काशी के एक क्षेत्र का नाम। **संगतियाँ** = मुख्य गायकों के साथ वाद्य बजाने या गानेवाले। **रियाज** = अभ्यास। **मरण** = मरना, मृत्यु। **कौम** = संप्रदाय, जाति।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं। शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग होता है। रीड अंदर से पोली होती है, जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है। रीड, नरकट (एक प्रकार की घास) से बनाई जाती है, जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है। इतनी ही महत्ता है इस समय डुमराँव की, जिसके कारण शहनाई जैसा वाद्य बजता है। फिर अमीरुद्दीन जो हम सबके प्रिय हैं, अपने उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ साहब हैं। उनका जन्म-स्थान भी डुमराँव ही है। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव निवासी थे। बिस्मिल्ला खाँ उस्ताद पैगंबर बख्श खाँ और मिट्ठन के छोटे साहबजादे हैं। ***(CBSE 2016)***

1. **बिस्मिल्ला खाँ का जन्म स्थान है–**

(क) फरीदाबाद (ख) लखनऊ

(ग) काशी (घ) डुमराँव।

2. **डुमराँव प्रसिद्ध है–**
   (क) गन्ना उत्पादन के लिए
   (ख) शहनाई की रीड बनाने के लिए
   (ग) चटाई बनाने के लिए
   (घ) कपास उत्पादन के लिए।

3. **शहनाई की रीड बनाई जाती है–**
   (क) बाँस से (ख) गन्ने से
   (ग) नरकट नामक घास से (घ) सरकंडे से।

4. **बिस्मिल्ला खाँ का बचपन का नाम था–**
   (क) अमीरुद्दीन (ख) नसीरुद्दीन
   (ग) आमिर खाँ (घ) बशीर खाँ।

5. **बिस्मिल्ला खाँ के माता-पिता का नाम था–**
   (क) अमीना और ख़ुदाबख्श खाँ
   (ख) मिट्ठन और पैगंबरबख्श खाँ
   (ग) नसीमा और अलीबख्श
   (घ) शकीला और शाहिद हुसैन।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख)।

(2) वही पुराना बाला जी का मंदिर, जहाँ बिस्मिल्ला खाँ को नौबतखाने रियाज़ के लिए जाना पड़ता है। मगर एक रास्ता है बाला जी मंदिर तक जाने का। यह रास्ता रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहाँ से होकर जाता है। इस रास्ते से अमीरुद्दीन को जाना अच्छा लगता है। इस रास्ते न जाने कितने तरह के बोल-बनाव कभी ठुमरी, कभी टप्पे, कभी दादरा के मार्फ़त ड्योढ़ी तक पहुँचते रहते हैं। रसूलन और बतूलन जब गाती हैं, तब अमीरुद्दीन को खुशी मिलती है। अपने ढेरों साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ साहब ने स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहनों को सुनकर मिली है। ***(CBSE 2016)***

1. **बिस्मिल्ला खाँ को रियाज़ के लिए कहाँ जाना पड़ता था–**
   (क) विश्वनाथ मंदिर में (ख) जगन्नाथ मंदिर में
   (ग) बाला जी के मंदिर में (घ) रसूलनबाई के पास।

2. **बाला जी के मंदिर का रास्ता कहाँ से होकर जाता था–**
   (क) पक्का महाल इलाके से
   (ख) रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहाँ से
   (ग) बजरडीहा के इलाके से
   (घ) शंभुनाथ वाली गली से।

3. **रसूलनबाई और बतूलनबाई के गाने का अमीरुद्दीन पर क्या प्रभाव पड़ता है–**
   (क) वे सुध-बुध खो देते हैं
   (ख) वे नाचने लगते हैं
   (ग) उन्हें बहुत खुशी मिलती है
   (घ) उन्हें निराशा होती है।

4. **बिस्मिल्ला खाँ को संगीत के प्रति आसक्ति कहाँ से हुई–**
   (क) अपने दादा जी की शहनाई सुनकर
   (ख) अपने मामा जी की प्रेरणा से
   (ग) रसूलनबाई और बतूलनबाई को सुनकर
   (घ) बाला जी के मंदिर का संगीत सुनकर।

5. **'रियाज़' से क्या तात्पर्य है–**
   (क) चित्र बनाने का अभ्यास
   (ख) संगीत का अभ्यास
   (ग) तलवारबाज़ी का अभ्यास
   (घ) कुश्ती का अभ्यास।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(3) अपने ऊहापोहों से बचने के लिए हम स्वयं किसी शरण, किसी गुफ़ा को खोजते हैं, जहाँ अपनी दुश्चिंताओं, दुर्बलताओं को छोड़ सकें और वहाँ से फिर अपने लिए एक नया तिलिस्म गढ़ सकें। हिरन अपनी ही महक से परेशान पूरे जंगल में उस वरदान को खोजता है, जिसकी गमक उसी में समाई है। अस्सी बरस से बिस्मिल्ला खाँ यही सोचते आए हैं कि सातों सुरों को बरतने की तमीज़ उन्हें सलीके से अभी तक क्यों नहीं आई। ***(CBSE 2017)***

1. **'ऊहापोह' शब्द का अर्थ है–**
   (क) ऊपर-नीचे (ख) बाहर-भीतर
   (ग) उलझन (घ) ऊँचा स्थान।

2. **किसी की शरण या गुफ़ा खोजने का क्या प्रयोजन है–**
   (क) डर से मुक्ति पाना
   (ख) अपनी उलझन का समाधान ढूँढ़ना
   (ग) सुरक्षा प्राप्त करना
   (घ) ज्ञान प्राप्त करना।

3. **हिरन जंगल में क्या खोजता है–**
   (क) कस्तूरी (ख) हरी घास
   (ग) रहने का स्थान (घ) पीने के लिए पानी।

4. **लेखक ने हिरन का उदाहरण किसके संदर्भ में दिया है–**
   (क) मनुष्य के संदर्भ में
   (ख) स्वयं अपने संदर्भ में
   (ग) बिस्मिल्ला खाँ के संदर्भ में
   (घ) किसी के संदर्भ में नहीं।

5. **बिस्मिल्ला खाँ अस्सी बरस से क्या सोचते आए हैं–**
   (क) वे बहुत अच्छे कलाकार हैं
   (ख) उन्हें सभी सुरों का बहुत अच्छा ज्ञान है
   (ग) उन्हें ख़ुदा का वरदान एक दिन अवश्य मिलेगा
   (घ) उन्हें सातों सुरों को बरतने की तमीज़ अभी तक क्यों नहीं आई।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(4) किसी दिन एक शिष्या ने डरते-डरते खाँ साहब को टोका, "बाबा! आप यह क्या करते हैं, इतनी प्रतिष्ठा है आपकी। अब तो आपको भारतरत्न भी मिल चुका है, यह फटी तहमद न पहना करें। अच्छा नहीं लगता, जब भी कोई आता है आप इसी फटी तहमद में सबसे मिलते हैं।" खाँ साहब मुसकराए, लाड़ से भरकर बोले, 'धत्! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं। तुम लोगों की तरह बनाव-सिंगार देखते रहते तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई।" तब क्या खाक रियाज़ हो पाता। ठीक है बिटिया, आगे से नहीं पहनेंगे, मगर इतना बताए देते हैं कि मालिक से यही दुआ है, "फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी तो कल सी जाएगी।" ***(CBSE 2019)***

1. **बिस्मिल्ला खाँ की शिष्या ने उन्हें किस बात के लिए मना किया–**
   (क) पान खाने के लिए
   (ख) अधिक अभ्यास करने के लिए
   (ग) फटी तहमद पहनने के लिए
   (घ) अधिक घूमने-फिरने के लिए।

2. **शिष्या ने खाँ साहब को फटी तहमद पहनने के लिए क्यों मना किया–**
   (क) फटे कपड़े पहनना अशुभ है
   (ख) फटे कपड़ों में रियाज़ अच्छा नहीं होता
   (ग) खाँ साहब बहुत प्रतिष्ठित हो चुके थे
   (घ) फटी तहमद गरीबी की पहचान है।

3. **खाँ साहब ने शिष्या को क्या समझाया–**
   (क) भारत रत्न हमें शहनाई पर मिला है, लुंगिया पर नहीं
   (ख) तुम लोगों की तरह बनाव-सिंगार करते तो हो चुकती शहनाई
   (ग) बनाव-सिंगार करते तो रियाज़ न हो पाता
   (घ) उपर्युक्त सभी।
4. **शिष्या के टोकने का बिस्मिल्ला खाँ ने बुरा क्यों नहीं माना–**
   (क) वे अपने शिष्यों के साथ बहुत घुले-मिले थे
   (ख) वे बहुत उदार और हँसमुख थे
   (ग) वे अपने शिष्यों से बहुत स्नेह करते थे
   (घ) उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं।
5. **बिस्मिल्ला खाँ की ख़ुदा से क्या दुआ थी–**
   (क) नई लुंगिया दें
   (ख) एक नई शहनाई दें
   (ग) फटा सुर न बख्शें
   (घ) फटी लुंगिया न दें।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(5) सन् 2000 की बात है। पक्का महाल (काशी विश्वनाथ से लगा हुआ अधिकतम इलाका) से मलाई बरफ बेचने वाले जा चुके हैं। खाँ साहब को इसकी कमी खलती है। अब देशी घी में वह बात कहाँ और कहाँ वह कचौड़ी-जलेबी। खाँ साहब को बड़ी शिद्दत से कमी खलती है। अब संगतियों के लिए गायकों के मन में कोई आदर नहीं रहा। खाँ साहब अफसोस जताते हैं। अब घंटों रियाज़ को कौन पूछता है? हैरान हैं बिस्मिल्ला खाँ। कहाँ वह कजली, चैती और अदब का ज़माना? ***(CBSE 2017)***

1. **गद्यांश में कब की बात बताई गई है–**
   (क) सन् 1990 की (ख) सन् 2000 की
   (ग) सन् 2010 की (घ) सन् 2011 की।
2. **मलाई बरफ़ बेचने वाले कहाँ से जा चुके हैं–**
   (क) चौपाटी से
   (ख) पक्का महाल से
   (ग) कच्चा महाल से
   (घ) राम घाट से।
3. **खाँ साहब को बड़ी शिद्दत से कमी खलती है–**
   (क) देशी घी और कचौड़ी-जलेबी की
   (ख) गुलाब जामुन की
   (ग) रसमलाई की
   (घ) चाट-पकौड़ी की।
4. **खाँ साहब को अफ़सोस है–**
   (क) रसूलनबाई और बतूलनबाई नहीं रहीं
   (ख) गायकों के मन में संगतियों के लिए आदर नहीं रहा
   (ग) काशी में गंगा मैली हो गई
   (घ) शहनाई को अब कोई नहीं पूछता।
5. **काशी एक समय में किस कारण प्रसिद्ध था–**
   (क) गायक संगतियों के लिए
   (ख) कजली और चैती जैसे रागों के लिए
   (ग) अदब-कायदे के लिए
   (घ) उपर्युक्त सभी सही हैं।

उत्तर : **1.** (ख) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (घ)।

(6) काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक रहे हैं, उसी तरह मुहर्रम-ताज़िया और होली-अबीर, गुलाल की गंगा-जुमनी संस्कृति भी एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। अभी जल्दी ही बहुत कुछ इतिहास बन चुका है। अभी आगे कुछ इतिहास बन जाएगा। फिर भी कुछ बचा है, जो सिर्फ़ काशी में है। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है। काशी आनंदकानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज़ सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है, जो हमेशा से दो क़ौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा। भारतरत्न से लेकर इस देश के ढेरों विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी-पुरस्कार एवं पद्मविभूषण जैसे सम्मानों से नहीं, बल्कि अपनी अजेय संगीत यात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे।'

1. **गंगा-जमुनी संस्कृति का क्या तात्पर्य है–**
   (क) गंगा और यमुना की संस्कृति
   (ख) अलग-अलग संस्कृति
   (ग) मिली-जुली संस्कृति
   (घ) परस्पर विरोधी संस्कृति।
2. **बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ का क्या संबंध है–**
   (क) भगवान और भक्त का
   (ख) दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं
   (ग) दोनों काशी वालों के प्रिय हैं
   (घ) दोनों एक-दूसरे के विरुद्ध हैं।
3. **बिस्मिल्ला खाँ का जीवन क्या प्रेरणा देता है–**
   (क) अच्छा शहनाई वादक बनने की
   (ख) अच्छा उपासक बनने की
   (ग) कर्मनिष्ठा और धार्मिक सद्भाव की
   (घ) निरंतर अभ्यास करने की।
4. **काशी की विशेषता नहीं है–**
   (क) काशी आनंदकानन है
   (ख) काशी संगीत के स्वर पर जागती-सोती है
   (ग) काशी में मरण भी मंगलमय है
   (घ) काशी में बहुत अशांति है।
5. **बिस्मिल्ला खाँ को कौन-सा सर्वोच्च सम्मान मिला–**
   (क) पद्मविभूषण (ख) नोबेल पुरस्कार
   (ग) भारतरत्न (घ) संगीत सम्राट।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **अमीरुद्दीन की ननिहाल है–**
   (क) इलाहाबाद (ख) लखनऊ
   (ग) कानपुर (घ) काशी।
2. **अमीरुद्दीन (बिस्मिल्ला खाँ) के मामाओं का नाम है–**
   (क) सादिक हुसैन और अलीबख्श
   (ख) आमिर हुसैन और शाहिद हुसैन
   (ग) अलीबेग और हसन अली
   (घ) महताब हुसैन और अल्लाहबख्श।

3. बिस्मिल्ला खाँ को संगीत की प्रेरणा किससे मिली–
(क) दादा सलार हुसैन से
(ख) मामाओं से
(ग) रसूलनबाई और बतूलनबाई से
(घ) अपने पिता से।

4. शहनाई की मंगल-ध्वनि का नायक किसे कहा जाता है–
(क) बिस्मिल्ला खाँ को
(ख) जाकिर हुसैन को
(ग) अनंतलाल को
(घ) अली अहमद हुसैन खान को।

5. सुषिर-वाद्य नहीं है–
(क) मुरली (ख) शहनाई
(ग) नागस्वरम् (घ) ढोलक।

6. सुषिर-वाद्यों में 'शाह' की उपाधि दी गई है–
(क) नागस्वरम् को (ख) मुरली को
(ग) शहनाई को (घ) शृंगी को।

7. बिस्मिल्ला खाँ ख़ुदा से हमेशा क्या माँगते थे–
(क) धन-दौलत (ख) एक अच्छा घर
(ग) यश-प्रतिष्ठा (घ) सच्चा सुर।

8. बिस्मिल्ला खाँ का जुड़ाव किस मुस्लिम पर्व से अधिक था–
(क) ईद-उल-फितर (ख) ईद-उल-अजहा
(ग) मुहर्रम (घ) शब-ए-बरात।

9. काशी में हर वर्ष संगीत का आयोजन कहाँ होता है–
(क) विश्वनाथ मंदिर में (ख) संकटमोचन मंदिर में
(ग) बालाजी के मंदिर में (घ) गंगा घाट पर।

10. जवानी के दिनों में खाँ साहब की पसंदीदा हीरोइन थी–
(क) नलिनी (ख) सुरैया
(ग) नरगिस (घ) सुलोचना।

11. बिस्मिल्ला खाँ को कुलसुम हलवाइन की कचौड़ी वाली दुकान पर जाना क्यों पसंद था?
(क) उसकी कचौड़ियाँ बेहद स्वादिष्ट खस्ता होती थीं
(ख) उसका कचौड़ी बनाने का अनूठा अंदाज था
(ग) उसकी कचौड़ी का दाम बहुत वाज़िब था
(घ) कचौड़ी तलते समय छन्न की आवाज में आरोह-अवरोह दिखता था।

12. 'संस्कृति की पाठशाला' किस नगर को कहा जाता है–
(क) आगरा को (ख) लखनऊ को
(ग) मथुरा को (घ) काशी को।

13. बिस्मिल्ला खाँ किस बात से व्यथित थे–
(क) सांप्रदायिकता से
(ख) काशी में हो रहे बदलावों से
(ग) भाषा के नाम पर होने वाले झगड़ों से
(घ) शहनाई के घटते प्रभाव से।

14. शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी क्यों हैं? ***(CBSE 2023)***
(क) डुमराँव में उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म हुआ
(ख) इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव निवासी थे
(ग) रीड की नरकट डुमराँव में सोन नदी-किनारे पाई जाती है
(घ) बिहार के संगीत प्रेमी परिवार डुमराँव में रहते थे।

15. अमीरुद्दीन को रसूलनबाई और बतूलनबाई के घरवाला रास्ता क्यों पसंद था? ***(CBSE SQP 2023-24)***
(क) संगीत के प्रति असीम रुचि के कारण
(ख) संगीत के प्रति अरुचि के कारण
(ग) वह छोटा रास्ता था
(घ) वह रास्ता साफ-सुथरा था।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (ग) **7.** (घ) **8.** (ग) **9.** (ख) **10.** (घ) **11.** (क) **12.** (घ) **13.** (ख) **14.** (ग) **15.** (क)।

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : काशी में होने वाले निम्नलिखित परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे–
(i) काशी की प्राचीन परंपराएँ लुप्त हो रही थीं।
(ii) संगीत और साहित्य के प्रति काशी वालों में अब पहले जैसा लगाव नहीं रहा था।
(iii) काशी के पक्का महाल में अब मलाई की बरफ़ बेचने वाले नहीं रहे थे।
(iv) कुलसुम हलवाइन की देसी घी की जलेबी और कचौड़ी भी अब वहाँ नहीं थीं।
(v) काशी की गंगा-जमुनी संस्कृति अब केवल इतिहास की बात रह गई थी।

प्रश्न 2 : बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल-ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है? ***(CBSE 2019; CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : शहनाई एक मंगल वाद्य है, जो मांगलिक अवसरों पर बजाया जाता है। बिस्मिल्ला खाँ भारत के सर्वश्रेष्ठ शहनाईवादक रहे हैं। उनसे बढ़कर सुरीला शहनाईवादक अभी तक कोई दूसरा नहीं हुआ है। शहनाईवादन की यात्रा में वे सबसे आगे हैं। इसीलिए उन्हें शहनाई की मंगल-ध्वनि का नायक कहा गया है।

प्रश्न 3 : बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे, तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : यह बिलकुल सत्य है कि बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे। वे अपनी कला को ही इबादत मानते थे। वे ख़ुदा से हमेशा सच्चे सुर का वरदान माँगते थे। जीवन के अंतिम समय तक वे शहनाई का रियाज़ करते रहे। उन्होंने 80 वर्षों तक शहनाईवादन किया। शहनाई के अलावा उन्होंने किसी दूसरे वाद्य को हाथ नहीं लगाया। वे अपने समय के सर्वश्रेष्ठ शहनाईवादक थे। इन बातों से पता चलता है कि वे कला के अनन्य उपासक थे।

प्रश्न 4 : शहनाई को सुषिर-वाद्यों में शाह की उपाधि क्यों दी गई है?

उत्तर : मुँह से फूँककर बजाए जाने वाले वाद्यों को सुषिर-वाद्य कहते हैं; जैसे–शहनाई, मुरली, वंशी, मुरछंग और नागस्वरम् आदि। सुषिर-वाद्यों में शहनाई का स्वर सबसे अधिक मोहक, सुरीला और मंगलकारक होता है। अतः शहनाई को शाह-ए-नय अर्थात् सुषिर-वाद्यों का शाह (राजा) कहा गया है।

प्रश्न 5 : बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के लिए सर्वोच्च सम्मान पाकर भी नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते–'मेरे मालिक एक सुर बख्श दे।' –इससे उनकी कौन-सी दो विशेषताएँ उभरकर आती हैं? ***(CBSE 2023)***

उत्तर : इस कथन से बिस्मिल्ला खाँ की निम्नलिखित दो विशेषताएँ उभरकर आती हैं–
(i) वे ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्थावान् थे।

(ii) वे स्वयं को पूर्ण कलाकार नहीं मानते थे और कला के प्रति समर्पित थे।

प्रश्न 6 : 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर बिस्मिल्ला खाँ का आरंभिक परिचय देते हुए बताइए कि उनमें संगीत के प्रति आसक्ति किनके गायन और संगीत को सुनकर हुई?

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ का जन्म डुमराँव में हुआ था। उनके पिता का नाम उस्ताद पैगंबरबख्श और माता का नाम मिट्ठन था। संगीत का वातावरण उन्हें विरासत में मिला था। उनके दोनों मामा सादिक हुसैन और अलीबख्श प्रसिद्ध शहनाईवादक थे। संगीत के प्रति उनकी आसक्ति रसूलनबाई और बतूलनबाई के संगीत और गायन को सुनकर हुई। वे बाला जी के मंदिर में आते-जाते इन दोनों बहनों के बोल-बनाव, ठुमरी, ठप्पे, दादरा आदि सुनते थे। इससे उन्हें संगीत की प्रेरणा मिली।

प्रश्न 7 : आप कैसे कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर: निम्नलिखित बातों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे–

(i) जितनी आस्था उनकी अपने धर्म में थी, उतनी ही हिंदू धर्म में भी थी।

(ii) वे प्रतिदिन पाँच वक्त नमाज़ पढ़ते थे तो प्रतिदिन बाला जी के मंदिर भी जाते थे। शहनाईवादन का प्रारंभ बाबा विश्वनाथ के स्मरण से करते थे।

(iii) जितनी श्रद्धा से वे मोहर्रम मनाते थे उतनी ही श्रद्धा से होली और दीवाली भी मनाते थे।

(iv) काशी और गंगा मैया में उनकी श्रद्धा हिंदुओं से भी बढ़कर थी।

प्रश्न 8 : 'शहनाई और काशी से बढ़कर कोई जन्नत नहीं इस धरती पर'– इस कथन के आधार पर बिस्मिल्ला खाँ के शहनाईवादन और काशीप्रेम से संबंधित घटनाओं का उल्लेख कीजिए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ को बचपन से शहनाई से प्रेम था। उन्होंने 80 वर्षों तक शहनाईवादन किया। प्रतिदिन वे खुदा से सच्चे सुर का वरदान माँगते थे। शहनाई के अलावा उन्होंने अन्य किसी वाद्य को हाथ नहीं लगाया। इसी प्रकार उनका काशीप्रेम भी अनन्य था।

काशी में रहने के विषय में पूछने पर बिस्मिल्ला खाँ अकसर कहते थे–'क्या करें मियाँ, ई काशी छोड़कर कहाँ जाएँ। गंगा मइया यहाँ, बाबा विश्वनाथ यहाँ, बाला जी का मंदिर यहाँ। यहाँ हमारे खानदान की कई पुश्तों ने शहनाई बजाई है। हमारे नाना तो वहीं बाला जी मंदिर में बड़े प्रतिष्ठित शहनाईबाज़ रह चुके हैं। अब हम क्या करें। मरते दम तक न यह शहनाई छूटेगी, न काशी। जिस ज़मीन ने हमें तालीम दी, जहाँ से अदब पाई, वो कहाँ और मिलेगी? शहनाई और काशी से बढ़कर कोई जन्नत नहीं इस धरती पर हमारे लिए।'

प्रश्न 9 : बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन-सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया है? आप उनमें से किन विशेषताओं को अपनाना चाहेंगे? कारणसहित दो का उल्लेख कीजिए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की धार्मिक सद्भावना, कर्मनिष्ठा, फकीरी स्वभाव, उदारता, सादगी तथा सरलता ने हमें प्रभावित किया है। हम उनके धार्मिक सद्भाव और कर्मनिष्ठा के गुणों को अपनाना चाहेंगे। धार्मिक सद्भाव इसलिए, क्योंकि हमारा देश अनेक धर्मों और संप्रदायों का देश है। इसकी एकता और अखंडता के लिए धार्मिक सद्भाव आवश्यक है। कर्मनिष्ठा इसलिए अपनाना चाहेंगे, क्योंकि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बिस्मिल्ला खाँ की तरह कर्मनिष्ठ होना आवश्यक है।

प्रश्न 10 : 'मजहब के प्रति समर्पित बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ के प्रति भी अपार थी। 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

अथवा **काशी विश्वनाथ के प्रति बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।** ***(CBSE 2016)***

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ काशी की संस्कृति में रचे-बसे थे। अपने मजहब के प्रति अत्यधिक समर्पित बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ के प्रति भी उतनी ही अपार थी। यही कारण है कि वे जब भी काशी से बाहर रहते थे, तब विश्वनाथ व बाला जी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते थे और चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही, मगर उसी ओर शहनाई का प्याला घुमा दिया जाता था। वे स्वयं भी कहा करते थे 'क्या करें मियाँ, ई काशी छोड़कर कहाँ जाएँ, गंगा मइया यहाँ, बाबा विश्वनाथ यहाँ, बाला जी यहाँ—अब हम क्या करें, मरते दम तक न यह शहनाई छूटेगी न काशी।' ये बातें उनकी काशी विश्वनाथ के प्रति अपार श्रद्धा को अभिव्यक्त करती हैं।

प्रश्न 11 : भारत रत्न बिस्मिल्ला खाँ पर 'सादा जीवन उच्च विचार' वाली कहावत चरितार्थ होती है, कैसे? ***(CBSE 2023)***

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई पर भारत रत्न मिल चुका था, लेकिन उनमें अपनी कला का बिल्कुल भी अहंकार नहीं था। उनमें बनाव-शृंगार की प्रवृत्ति नहीं थी। मिलने आने वालों से वे फटी तहमद में ही मिल लेते थे। उनमें विनम्रता और धार्मिक सद्भावना कूट-कूटकर भरी थी। इस प्रकार उनपर 'सादा जीवन उच्च विचार' की कहावत पूर्णतः चरितार्थ होती है।

प्रश्न 12 : 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि बिस्मिल्ला खाँ वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इंसान थे।

उत्तर: निम्नलिखित बातों से स्पष्ट होता है कि बिस्मिल्ला खाँ एक सच्चे इंसान थे–

(i) वे सभी धर्मों का आदर करते थे। धार्मिक कट्टरता और संकीर्णता उनमें बिलकुल नहीं थी। हिंदू-मुस्लिम दोनों कौमों में एकता बनाए रखने के वे जीवंत उदाहरण थे।

(ii) वे अपने कर्म को ही पूजा मानते थे।

(iii) वे एक महान कलाकार थे, लेकिन उनमें अपनी कला का घमंड नहीं था।

(iv) वे बहुत सादे और सरल इंसान थे, उनमें आडंबर या दिखावा नहीं था।

(v) 'भारतरत्न' सहित सैकड़ों पुरस्कार पाकर भी वे अत्यंत विनम्र रहे।

(vi) वे परंपराओं का निर्वाह करने वाले इंसान थे।

प्रश्न 13 : अमीरुद्दीन को रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहाँ से जाना क्यों अच्छा लगता था? इन दोनों बहनों की गायकी का लाभ बाला जी की ड्योढ़ी को कैसे मिला? ***(CBSE 2017)***

उत्तर: अमीरुद्दीन (बिस्मिल्ला खाँ) बाला जी के मंदिर में शहनाईवादन के लिए जाया करते थे। उन्हें रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहाँ से जाना इसलिए अच्छा लगता था; क्योंकि रास्ते में इन दोनों गायिकाओं से नए बोल-बनाव, ठुमरी, दादरा, ठप्पे आदि सुनने को मिलते थे। मंदिर जाकर वह इन सबका प्रयोग शहनाई पर करते थे। इसका लाभ यह हुआ कि उनकी शहनाईवादन की कला में दिन-प्रतिदिन निखार आता गया।

प्रश्न 14 : काशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहा गया है?

उत्तर: काशी का भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल से ही महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। गंगा मैया यहाँ, बाबा विश्वनाथ यहाँ, भारत की मिली-जुली कौमों की संस्कृति यहाँ, सर्वश्रेष्ठ शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ ने

इसे अपने सुरों से सँवारा है। खान-पान की प्राचीन परंपराएँ और साहित्य व संगीत का अदब काशी में बसता है। कहते हैं, काशी में मरने वाले को जन्नत नसीब होती है। इसका इतिहास हज़ारों साल पुराना है। बड़े-बड़े विद्वान, बड़े रामदास जी, मौजुद्दीन खाँ आदि यहाँ हुए। आज भी काशी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। इन्हीं विशेषताओं के कारण काशी को 'संस्कृति की पाठशाला' कहा गया है।

प्रश्न 15 : बिस्मिल्ला खाँ मुहर्रम के दिनों में पूरे दस दिनों तक शोक किस प्रकार मनाते थे?

अथवा **मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ के जुड़ाव को अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : मुहर्रम मुसलमानों का शोक का त्योहार है। यह दस दिनों तक चलता है। बिस्मिल्ला खाँ अपने मजहब के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। अपने परिवार और मजहब की परंपरा के अनुसार खाँ साहब पूरी श्रद्धा के साथ मुहर्रम की अज़ादारी मनाते थे। इस अवसर पर उनके खानदान का कोई भी व्यक्ति न तो शहनाई बजाता था और न ही संगीत के किसी कार्यक्रम में शामिल होता था। स्वयं खाँ साहब आठवीं तारीख के दिन खड़े होकर शहनाई बजाते और दालमंडी में फातमान के करीब आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए नौहा बजाते जाते थे। इस दिन राग-रागनियों की अदायगी का निषेध होता था।

प्रश्न 16 : 'नौबतखाने में इबादत' पाठ में किस प्रसिद्ध संगीतज्ञ की चर्चा की गई है? उनके स्वभाव और कार्यकलापों से सांप्रदायिक सद्भाव के क्षेत्र में हमें क्या शिक्षा मिलती है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : 'नौबतखाने में इबादत' पाठ में विश्व प्रसिद्ध शहनाईवादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की चर्चा की गई है। उनके स्वभाव और कार्यकलापों से हमें सांप्रदायिक सौहार्द तथा आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा मिलती है। वे अपने मजहब के साथ-साथ अन्य धर्मों का भी पूरा सम्मान श्रद्धापूर्वक करते थे। इसके अतिरिक्त उनके व्यक्तित्व से हमें सादगी, विनम्रता तथा निरंतर सीखते रहने की शिक्षा भी मिलती है।

प्रश्न 17 : अलीबख्श के घराने का खानदानी पेशा क्या था? मंदिरों में प्रायः कौन-कौन-से राग गाए जाते थे? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : अलीबख्श के घराने का खानदानी पेशा शहनाईवादन था। उनके अब्बाजान भी बाला जी मंदिर की ड्योढ़ी पर शहनाई बजाते थे। उस समय मंदिरों में प्रायः भीमपलासी, मुलतानी, कल्याण, ललित, भैरवी आदि गाए जाते थे।

प्रश्न 18 : 'दादा की मीठी शहनाई उनके हाथ लग चुकी थी', कथन का क्या आशय है? 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर लिखिए। ***(CBSE 2017)***

उत्तर : इस कथन का आशय यह है कि जब अमीरुद्दीन चार साल का था तो नाना को शहनाई बजाते हुए देखता था। जब नाना रियाज़ के बाद उठकर चले जाते तो वह वहाँ रखी बहुत सारी शहनाइयों को बजा-बजाकर देखता और नाना की मीठी वाली शहनाई ढूँढ़ता था। तब उसे नहीं पता था कि शहनाई रियाज़ करने से मीठी होती है। आज अमीरुद्दीन बिस्मिल्ला खाँ बन चुके हैं। रियाज़ से वे शहनाईवादन की कला में प्रवीण हो गए हैं। अतः आज दादा की मीठी शहनाई उनके हाथ लग चुकी है।

प्रश्न 19 : काशी में अभी क्या शेष बचा है? ***(CBSE 2017)***

उत्तर : काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज़ सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है, जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे से साथ रहने की प्रेरणा देता रहा है।

प्रश्न 20 : 'काशी में बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक हैं'– इस कथन का क्या आशय है? ***(CBSE 2018)***

उत्तर : इस कथन का आशय यह है कि बिस्मिल्ला खाँ बचपन से बाबा विश्वनाथ और बाला जी के मंदिर में शहनाई बजाते आए हैं। इसी से वे शहनाईवादन कला में प्रवीण हो सके हैं। उनके मन में बाबा विश्वनाथ के प्रति अगाध श्रद्धा थी। वे अपनी इस कला-दक्षता का श्रेय बाबा विश्वनाथ को ही देते थे। इसी प्रकार बाबा विश्वनाथ के मंदिर का प्रत्येक दिन भी बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई के मधुर स्वर से ही प्रारंभ होता था। अतः बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक थे और एक-दूसरे के बिना अधूरे थे।

प्रश्न 21 : बिस्मिल्ला खाँ की तुलना कस्तूरी मृग से क्यों की गई है? ***(CBSE 2020)***

उत्तर : कस्तूरी मृग की नाभि में कस्तूरी होती है, लेकिन वह इससे अनजान होता है। वह उसे ढूँढ़ने के लिए वन में इधर-उधर दौड़ता रहता है। इसी प्रकार बिस्मिल्ला खाँ सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक हैं, लेकिन वे अपनी इस योग्यता से अनजान हैं। वे आज भी खुदा से सच्चे सुर का वरदान माँगते हैं। इसीलिए उनकी तुलना लेखक ने कस्तूरी मृग से की है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

सन् 2000 की बात है। पक्का महाल (काशी विश्वनाथ से लगा हुआ अधिकतम इलाका) से मलाई बरफ़ बेचने वाले जा चुके हैं। खाँ साहब को इसकी कमी खलती है। अब देशी घी में वह बात कहाँ और कहाँ वह कचौड़ी-जलेबी। खाँ साहब को बड़ी शिद्दत से कमी खलती है। अब संगतियों के लिए गायकों के मन में कोई आदर नहीं रहा। खाँ साहब अफसोस जताते हैं। अब घंटों रियाज़ को कौन पूछता है? हैरान हैं बिस्मिल्ला खाँ। कहाँ वह कजली, चैती और अदब का ज़माना?

1. गद्यांश में कब की बात बताई गई है–

(क) सन् 1990 की (ख) सन् 2000 की
(ग) सन् 2010 की (घ) सन् 2011 की।

2. मलाई बरफ़ बेचने वाले कहाँ से जा चुके हैं–

(क) चौपाटी से (ख) पक्का महाल से
(ग) कच्चा महाल से (घ) राम घाट से।

3. खाँ साहब को बड़ी शिद्दत से कमी खलती है–

(क) देशी घी और कचौड़ी-जलेबी की
(ख) गुलाब जामुन की
(ग) रसमलाई की
(घ) चाट-पकौड़ी की।

4. **खाँ साहब को अफ़सोस है–**

(क) रसूलनबाई और बतूलनबाई नहीं रहीं

(ख) गायकों के मन में संगतियों के लिए आदर नहीं रहा

(ग) काशी में गंगा मैली हो गई

(घ) शहनाई को अब कोई नहीं पूछता।

5. **काशी एक समय में किस कारण प्रसिद्ध था–**

(क) गायक संगतियों के लिए

(ख) कजली और चैती जैसे रागों के लिए

(ग) अदब-कायदे के लिए

(घ) उपर्युक्त सभी सही हैं।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **शहनाई की मंगल-ध्वनि का नायक किसे कहा जाता है–**

(क) बिस्मिल्ला खाँ को

(ख) जाकिर हुसैन को

(ग) अनंतलाल को

(घ) अली अहमद हुसैन खान को।

7. **बिस्मिल्ला खाँ को मिलने वाला सर्वोच्च सम्मान है–**

(क) पद्मविभूषण (ख) संगीत नाटक अकादमी

(ग) भारतरत्न (घ) पद्मश्री।

8. **बिस्मिल्ला खाँ की मृत्यु कब हुई–**

(क) 25 अगस्त, 2005 (ख) 20 अगस्त, 2004

(ग) 21 अगस्त, 2006 (घ) 21 अगस्त, 2007।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे, तर्कसहित उत्तर दीजिए।**

10. **'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर बिस्मिल्ला खाँ का आरंभिक परिचय देते हुए बताइए कि उनमें संगीत के प्रति आसक्ति किनके गायन और संगीत को सुनकर हुई?**

11. **'मजहब के प्रति समर्पित बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ के प्रति भी अपार थी।' 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।**

अथवा **काशी विश्वनाथ के प्रति बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।**

12. **काशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहा गया है?**